Baba Jee Aur Ghar Ke Jhagde (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 214
Weekly Booklet : 214

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" की एक क़िस्त मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

बाबा जी और घर के झगड़े

सफ़्हात 21

आ़लिम को टोकने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाने आ'ला हज़रत 03
जो बाबा पैसे न मांगते हों वोह कैसे ग़लत़ हो सकते हैं ? 14
घर से सुइयों वाला पुतला बरआमद हो जाए तो ! 14
शरई सुबूत किसे कहते हैं ? 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **बाबा जी और घर के झगड़े**
सिने तबाअ़त : सफ़रुल मुज़फ़्फ़र **1443** हि., सप्टेमबर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

बाबा जी और घर के झगड़े

येह रिसाला (**बाबा जी और घर के झगड़े**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून ''ग़ीबत की तबाह कारियां'' सफ़ह़ा 210 ता 225 से लिया गया है।

बाबा जी और घर के झगड़े

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला : **''बाबा जी और घर के झगड़े''** पढ़ या सुन ले उसे ईमानो आफ़ियत के साथ सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के जेरे साया जल्वए मह़बूब में शहादत अ़ता फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात अलिय्यिल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जब किसी मस्जिद के पास से गुज़रो तो रसूले अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो।

(فضل الصلاۃ علی النبی للقاضی الجہضمی، ص70، رقم:80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ग़ीबत करने वाले को इशारे से नहीं ज़बान से रोकिये

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के फ़रमाने वाला शान का ख़ुलासा है : जहां **ग़ीबत** हो रही हो और येह (मुरव्वत में नहीं बल्कि) डर के सबब ज़बान से रोक नहीं सकता तो दिल में बुरा जाने तो अब इसे गुनाह नहीं होगा, अगर वहां से उठ कर जा सकता है या गुफ़्तगू का रुख़ बदल सकता है मगर ऐसा नहीं

करता तो **गुनहगार** है, अगर ज़बान से कह भी देता है कि "ख़ामोश हो जाओ" मगर दिल से सुनना चाहता है तो येह **मुनाफ़क़त** है और जब तक दिल से बुरा न जाने गुनाह से बाहर न होगा, फ़क़त हाथ या अपने अब्रू या पेशानी के इशारे से चुप कराना काफ़ी न होगा क्यूं कि येह सुस्ती है और **ग़ीबत** जैसे गुनाह को मा'मूली समझने की अ़लामत है, (अगर फ़साद का अन्देशा न हो तो) **ग़ीबत** करने वाले को सख़्ती से वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में रोके। (احیاء العلوم، 3/180) ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस शख़्स के पास किसी मोमिन को ज़लील किया जा रहा हो और वोह त़ाक़त (रखने) के बा वुजूद उस की मदद न करे **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन लोगों के सामने उसे रुस्वा करेगा।

(مسند امام احمد، 5/412، حدیث:15985)

उ़लमा को अ़वाम न टोकें

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़ीबत से रोकने वाले के लिये इतनी मा'लूमात होना ज़रूरी है कि वोह गुनाहों भरी **ग़ीबत** की पहचान रखता हो नीज़ रोकते वक़्त अपनी बात का वज़्न देखना भी बहुत ज़रूरी है कहीं ऐसा न हो कि आप किसी को मन्अ़ करें और कोई फ़ितना खड़ा हो जाए येह बात भी ज़ेह्न में रखिये कि बा'ज़ अवक़ात बिल ख़ुसूस अहले इ़ल्म ह़ज़रात की कोई बात सरसरी त़ौर पर सुनने वाले को **ग़ीबत** लगती है मगर दर ह़क़ीक़त वोह गुनाहों भरी **ग़ीबत** नहीं होती क्यूं कि **ग़ीबत** की जाइज़ सूरतें भी मौजूद हैं, मुह़ावरा है : خَطائے بُزُرگان گرفتن خطا است या'नी "बुज़ुर्गों पर ए'तिराज़ करना, उन की ख़त़ा पकड़ना, ख़ुद ख़त़ा है।" लिहाज़ा उ़लमाए किराम को अ़वाम हरगिज़ न टोकें और उन के लिये दिल में मैल भी न लाएं। हां अगर आप को **ग़ीबत** के बारे में मा'लूमात हों और वोह

आ़लिम साहिब वाक़ेई सरीह़ **ग़ीबत** कर रहे हों तो वहां से उठ जाइये, मुम्किन हो तो बात का रुख़ बदल दीजिये अगर हटना या बात बदलना और किसी त़रह़ से **ग़ीबत** सुनने से बचना मुम्किन न हो तो दिल में बुरा जानते हुए ह़त्तल मक़्दूर बे तवज्जोही बरतिये । अगर "हां" में सर हिलाएंगे या दिलचस्पी और तअ़ज्जुब का इज़्हार करेंगे, ताईद में "अच्छा", "जी", "ओहो" वग़ैरा आवाज़ें निकालेंगे तो गुनहगार होंगे ।

आ़लिम को टोकने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाने आ'ला ह़ज़रत

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़तावा रज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 708 पर लिखते हैं : उ़लमा पर अ़वाम को (ह़क़्क़े) ए'तिराज़ नहीं पहुंचता और जो मश्हूर ब मा'रिफ़त हो उस का मुआ़मला ज़ियादा नाज़ुक है हर आ़मी मुसल्मान के लिये हुक्म है कि उस के (या'नी उस आ़म मुसल्मान के भी) हर क़ौल व फ़े'ल के लिये सत्तर (70) महमले ह़सन (या'नी अच्छे एह़तिमालात और जाइज़ तावीलात) तलाश करो, (उन अ़वाम पर भी बद गुमानी मत करो) न कि उ़लमा व मशाइख़ जिन पर **ए'तिराज़** का अ़वाम को कोई ह़क़ (ही ह़ासिल) नहीं ! यहां तक कि कुतुबे दीनिया में तसरीह़ (या'नी साफ़ लिखा) है अगर सराह़तन नमाज़ का वक़्त जा रहा है और आ़लिम नहीं उठता तो जाहिल का येह कहना गुस्ताख़ी है कि "नमाज़ को चलिये", वोह (या'नी आ़लिम) इस (या'नी ग़ैरे आ़लिम) के लिये हादी (या'नी रहनुमा) बनाया गया है न कि येह (जाहिल) उस (आ़लिम) के लिये । وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 708)

सुनूं न फ़ोह़ूश कलामी न ग़ीबतो चुग़ली — तेरी पसन्द की बातें फ़क़त सुना या रब
करें न तंग ख़यालाते बद कभी कर दे — शुऊ़रो फ़िक्र को पाकीज़गी अ़त़ा या रब

(वसाइले बख़्शिश स. 78)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जिस को सलामती की दुआ दी उसी की ग़ीबत !!!

किसी को **सलाम** कर के जान व माल और इ़ज़्ज़तो आबरू वग़ैरा की सलामती की दुआ दी और फिर जूं ही वहां से हटे مَعَاذَاللّٰه उसी की इ़ज़्ज़त उछालनी या'नी **ग़ीबत** करनी शुरूअ़ कर दी येह कैसा अ़जीब मुआ़मला है ! जी हां, "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" के मा'ना हैं : "तुम पर सलामती हो।" लगे हाथों सलाम की निय्यत भी मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये चुनान्चे आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 102 पर लिखे हुए जुज़्ये का ख़ुलासा है : "सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगा हूं इस का माल और इ़ज़्ज़तो आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं।" (ردالمحتار، 9/682) आ़रिफ़ बिल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे मुलाक़ात के वक़्त सलाम करते तो इस से येह मुराद लेते कि तू मेरी त़रफ़ से सलामत रहा, मैं तेरी ग़ीबत और मज़म्मत नहीं करूंगा। (قوت القلوب، 1/348)

करूं किसी की भी ग़ीबत न मैं कभी या रब ख़ुदाए पाक करम ! अ़ज़ पए नबी या रब
मुआ़फ़ कर दे गुनाह तू मेरे सभी या रब तुफ़ैले ह़ज़रते शेरे ख़ुदा अ़ली या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ख़ौफ़नाक ह़ादिसा होते होते रह गया

ग़ीबत करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के दीनी माह़ोल से हर दम

वाबस्ता रहिये, सुन्नतें सीखने के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **नेक आ'माल** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **जाएज़ा** के ज़रीए़ रिसाला पुर कर के हर माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी दीजिये न जाने कब दिल चोट खा जाए और दोनों जहां में भलाइयां इ़नायत हो जाएं। आप की तरग़ीब के लिये एक **मदनी बहार** गोश गुज़ार करता हूं : 1425 हि. में होने वाले तीन दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के चन्द रोज़ बा'द (सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) से मिलने एक साह़िब आए, उन के बयान का ख़ुलासा कुछ इस त़रह़ है, ''मैं **A.C.** कोच का ड्राइवर हूं, परेशानियों ने तबाह ह़ाल कर दिया था, शैत़ान मुझे बावला बना कर मेरा येह ज़ेह्न बना चुका था कि दुन्या वाले मत़्लबी और बे वफ़ा हैं मुझे **ख़ुदकुशी** कर लेनी है मगर तन्हा नहीं औरों को भी साथ ले कर मरना है। बहर ह़ाल उन्हों ने येह त़ै किया हुवा था कि खचाखच भरी हुई कोच को पूरी रफ़्तार के साथ गहरी खाई में गिरा कर सब सुवारियों समेत अपने आप को ख़त्म कर दूंगा। ऐसे में सुवारियां ले कर इज्तिमाअ़ में आने की सआ़दत मिल गई। गोया उन्ही के लिये **ख़ुदकुशी का इलाज** नामी बयान हुवा, सुन कर वोह ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठे, उन्हों ने अच्छी त़रह़ समझ लिया कि **ख़ुदकुशी** से जान छूटती नहीं मज़ीद फंस जाती है। उन्हों ने सच्चे दिल से तौबा की, उन का कहना था कि बयान करने वाले का नाम व पता लोगों से ले कर अब आप के पास दुआ़एं लेने आया हूं।'' उन के ह़क़ में दुआ़ए ख़ैर की गई, नमाज़ की

पाबन्दी, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हाज़िरी, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र वग़ैरा की **अच्छी अच्छी निय्यतें** कर के रोते हुए पलट गए।

क्या ख़ुदकुशी से जान छूट जाती है ?

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "बयानाते अ़त्तारिय्या" (472 सफ़ह़ात) ह़िस्सए दुवुम के सफ़ह़ा 404 ता 406 पर है : **ख़ुदकुशी** करने वाले शायद येह समझते हैं कि हमारी जान छूट जाएगी ! ह़ालां कि इस से जान छूटने के बजाए नाराज़िये रब्बुल इ़ज़्ज़त की सूरत में निहायत बुरी त़रह फंस जाती है। ख़ुदाए पाक की क़सम ! ख़ुदकुशी का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

आग में अ़ज़ाब

ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स जिस चीज़ के साथ **ख़ुदकुशी** करेगा वोह जहन्नम की आग में उसी चीज़ के साथ **अ़ज़ाब** दिया जाएगा।

(بخاری،4/289،حدیث:6652)

उसी हथियार से अ़ज़ाब

ह़ज़रते साबित बिन ज़ह़्ह़ाक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : जिस ने लोहे के हथियार से **ख़ुदकुशी** की तो उसे जहन्नम की आग में उसी हथियार से **अ़ज़ाब** दिया जाएगा। (بخاری،1/459،حدیث:1363)

गला घोंटने का अ़ज़ाब

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने अपना गला घोंटा तो वोह जहन्नम की **आग में अपना गला घोंटता रहेगा** और जिस ने ख़ुद को नेज़ा मारा वोह जहन्नम की आग में ख़ुद को नेज़ा मारता रहेगा। (بخاری،1/460،حدیث:1365)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ख़ुदकुशी का इ़लाज नामी बयान मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिये और सब घर वालों को सुनाइये और ख़ुसूसन परेशान ह़ालों को सुनने के लिये पेश कीजिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه इसी बयान को ह़स्बे ज़रूरत तरमीम के साथ बनाम **ख़ुदकुशी का इ़लाज** रिसाले की सूरत में भी प्रिन्ट किया गया है। अपने अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** से ज़ियादा से ज़ियादा ख़रीद कर ग़म के मारों, दुखियारों और बीमारों बल्कि आ़म मुसल्मानों में तक़्सीम कीजिये । अगर पढ़ कर कोई एक भी मुसल्मान **ख़ुदकुशी** के इरादे से बाज़ आ गया तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم आप का भी बेड़ा पार होगा ।

क़ब्र में शक्ल तेरी बिगड़ जाएगी पीप में लाश तेरी लिथड़ जाएगी
बाल झड़ जाएंगे खाल उधड़ जाएगी कीड़े पड़ जाएंगे ना'श सड़ जाएगी
मत गुनाहों पे हो भाई बेबाक तू भूल मत येह ह़क़ीक़त कि है ख़ाक तू
थाम ले दामने शाहे लौलाक तू सच्ची तौबा से हो जाएगा पाक तू

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 656)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُاللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

घर जा कर नेकी की दा'वत देते

ह़ज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दुरैनी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को जब मा'लूम होता कि किसी शख़्स ने उन की **ग़ीबत** की है तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़हमाइश (या'नी समझाने) के लिये उस के घर तशरीफ़ ले जाते और फ़रमाते : ऐ भाई ! आप को क्या हो गया कि आप ने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के गुनाह उठा लिये ! (تنبیہ المغترین، ص192)

''गुनाह उठा लिये'' की वज़ाहत

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस **ह़िकायत** से पता चला कि हमारे अस्लाफ़ अपनी **ग़ीबत** का सुन कर धूआं फूआं हो कर आस्तीनें चढ़ा कर **ग़ीबत** करने वाले पर चढ़ दौड़ने के बजाए, अगर जाना पड़ता तो उस के घर जा कर भी उस को नेकी की दा'वत पहुंचाते और उस के दिल को चोट लगाने वाले कलिमात इर्शाद फ़रमाते। इस **ह़िकायत** में ''गुनाह उठा लिये'' जो कहा गया है इस से मुराद येह है कि अगर बिग़ैर तौबा और मुग़्ताब या'नी जिस की **ग़ीबत** की उस से बे मुआ़फ़ करवाए मरा तो जिस की **ग़ीबत** की है उस को अपनी नेकियां देनी पड़ेंगी, अगर नेकियां न हुईं या कम पड़ गईं तो उस के गुनाह अपने सर उठाने पड़ेंगे ! आह ! **ग़ीबत** का मुआ़मला बेह़द नाज़ुक है, तौबा तौबा हमारी करोड़ों बार तौबा। अ़ह्द कीजिये : **न ग़ीबत करूंगा न सुनूंगा।**

है ग़ीबत से बचने की निय्यत इलाही मैं क़ाइम रहूं कर इआ़नत[1] इलाही

रह़मत पलट जाती है

ह़ज़रते ह़ातिम असम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब किसी मजलिस में येह तीन बातें हों तो उन लोगों से रह़मत पलट जाती है : (1) दुन्या का ज़िक्र (2) ज़ियादा हंसना और (3) लोगों की ग़ीबत करना। (تنبیہ المغترین، ص194)

अ़ज़ाबे क़ब्र के तीन ह़िस्से

ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : हमें बताया गया है कि **अ़ज़ाबे क़ब्र** को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है : एक तिहाई अ़ज़ाब **ग़ीबत** से, एक तिहाई **चुग़ली** से, और एक तिहाई **पेशाब** (के छींटों से ख़ुद को न बचाने) से होता है। (ذم الغیبۃ لابن ابی الدنیا، ص92، رقم:52)

1 ..... या'नी इमदाद

कुत्तों की शक्ल में उठेंगे

हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ग़ीबत** करने वालों, **चुग़ुल** ख़ोरों और पाकबाज़ लोगों के **ऐ़ब** तलाश करने वालों को **अल्लाह** पाक (क़ियामत के दिन) **कुत्तों** की शक्ल में उठाएगा। (التوبیخ والتنبیہ لابی الشیخ الاصبہانی، ص97، رقم:220، الترغیب والترہیب، 3/325، حدیث:10)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि तमाम इन्सान क़ब्रों से ब शक्ले इन्सानी उठेंगे फिर मह़शर में पहुंच कर बा'ज़ की सूरतें मस्ख़ हो जाएंगी। (या'नी बिगड़ जाएंगी मसलन मुख़्तलिफ़ जानवरों जैसी हो जाएंगी) (मिरआतुल मनाजीह, 6/660)

गोश्त की छोटी सी बोटी

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ज़बान अगर्चे ब ज़ाहिर गोश्त की एक छोटी सी बोटी है मगर येह ख़ुदाए पाक की अ़ज़ीमुश्शान ने'मत है। इस ने'मत की क़द्र तो शायद गूंगा ही जान सकता है। ज़बान का दुरुस्त इस्ति'माल जन्नत में दाख़िल और ग़लत़ इस्ति'माल जहन्नम से वासिल कर सकता है। इस ज़बान से तिलावते क़ुरआन करने वाला और दुरूदो सलाम पढ़ने वाला रब्बुल इ़ज़्ज़त की इ़नायत से जन्नत में जाता है। इस ज़बान से किसी मुसल्मान को गाली निकालने वाला नीज़ ग़ीबत, चुग़ली व तोहमत का मुरतकिब अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार क़रार पाता है। अगर कोई बद तरीन काफ़िर भी दिल की तस्दीक़ के साथ ज़बान से لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ ले तो कुफ़्रो शिर्क की सारी गन्दगी से पाक हो जाता है उस की ज़बान से निकला हुवा येह कलिमए त़य्यिबा उस के गुज़श्ता तमाम गुनाहों के मैल कुचैल को धो डालता है। ज़बान से अदा किये हुए इस कलिमए पाक के बाइ़स वोह गुनाहों से ऐसा

पाको साफ़ हो जाता है जैसा कि उस रोज़ था जिस रोज़ उस की मां ने उसे जना था। येह अ़ज़ीम **मदनी इन्क़िलाब** दिल की ताईद के साथ **ज़बान** से अदा किये हुए कलिमे शरीफ़ की बदौलत आया।

हर बात पर साल भर की इबादत का सवाब

ऐ काश ! हम भी अपनी **ज़बान** का सह़ीह़ इस्ति'माल करना सीख लें। **ग़ीबतों,** चुग़लियों और तोह्मतों भरी बातों से पीछा छुड़ा लें, बेशक **अल्लाह व रसूल** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मरज़ी के मुत़ाबिक़ अगर **ज़बान** को चलाया जाए तो **जन्नत** में घर तय्यार हो जाएगा। इस ज़बान से हम तिलावते क़ुरआने पाक करें, **ज़िक्रुल्लाह** करें, दुरूदो सलाम का विर्द करें, ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत दें तो اِنْ شَآءَاللّٰه हमारे वारे ही न्यारे हो जाएंगे। **मुकाशफ़तुल क़ुलूब** में है : ह़ज़रते **मूसा कलीमुल्लाह** عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे करीम ! जो अपने भाई को बुलाए और उसे नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस शख़्स का बदला क्या होगा ? फ़रमाया : "मैं उस के हर कलिमे के बदले **एक साल की इबादत का सवाब** लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।" (مکاشفۃ القلوب، ص 48)

आ़शिक़ाने रसूल के मीठे बोल की बरकात

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नेकी की बात बताने, गुनाह से नफ़रत दिलाने और इन कामों के लिये किसी पर **इन्फ़िरादी कोशिश** का सवाब कमाने के लिये येह ज़रूरी नहीं कि जिस को समझाया वोह मान जाए तो ही सवाब मिलेगा बल्कि अगर वोह न माने तब भी اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم सवाब ही सवाब है और अगर आप की **इन्फ़िरादी कोशिश** से किसी ने गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारनी शुरूअ़ कर दी फिर

तो اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा। आइये इस ज़िम्न में **इन्फ़िरादी कोशिश** की एक **मदनी बहार** सुनते चलें चुनान्चे एक इस्लामी भाई मेट्रिक के तालिबे इल्म थे, बुरी सोहबत के बाइस ज़िन्दगी गुनाहों में बसर हो रही थी, मिज़ाज बेहद गुसीला था, बद तमीज़ी की आदते बद इस हद तक पहुंच चुकी थी कि वालिद साहिब कुजा दादाजान और दादीजान के सामने भी क़ैंची की तरह ज़बान चलाते। एक रोज़ आशिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक **दा'वते इस्लामी** का एक "मदनी क़ाफ़िला" उन के महल्ले की मस्जिद में आ पहुंचा, खुदा का करना ऐसा हुवा कि वोह **आशिक़ाने रसूल** से मुलाक़ात के लिये पहुंच गए। एक इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **दर्स** में शिर्कत की दा'वत पेश की, उन के **मीठे बोल** ने उन पर ऐसा असर किया कि वोह उन के साथ **दर्स** में बैठ गए। उन्हों ने दर्स के बा'द इन्तिहाई मीठे अन्दाज़ में उन्हें बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द **दा'वते इस्लामी का तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ** हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये। उन के दर्स ने इन पर बहुत अच्छा असर किया था लिहाज़ा वोह इन्कार न कर सके। यहां तक कि वोह सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में हाज़िर हो गए। वहां की रोनक़ें और बरकतें देख कर वोह हैरान रह गए, इज्तिमाअ में होने वाले आख़िरी बयान **"गाने बाजे की होलनाकियां"** सुन कर वोह थर्रा उठे और आंखों से आंसू जारी हो गए। اَلْحَمْدُلِلّٰه वोह गुनाहों से तौबा कर के उठे और दा'वते इस्लामी के **मदनी माहोल** से वाबस्ता हो गए। उन की **मदनी माहोल** से वाबस्तगी से उन के घर वालों ने इत्मीनान का सांस लिया, दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से इन जैसे नौ जवान

की इस्लाह़ से मुतअस्सिर हो कर उन के बड़े भाई ने भी दाढ़ी मुबारक रखने के साथ साथ इ़मामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। उन की एक ही बहन है। اَلْحَمْدُلِلّٰه उस ने भी **मदनी बुरक़अ़** पहन लिया, اَلْحَمْدُلِلّٰه घर का हर फ़र्द सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِعَلَيْه का मुरीद हो गया। उस **इन्फ़िरादी कोशिश** करने वाले इस्लामी भाई के **मीठे बोल** की बरकत से मुझ पर **अल्लाह** करीम ने ऐसा करम फ़रमाया कि मैं ने **क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़** करने की सआ़दत ह़ासिल कर ली और **दर्से निज़ामी** (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُلِلّٰه **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों के तअ़ल्लुक़ से **अ़लाक़ाई क़ाफ़िला ज़िम्मादार** भी बने।

दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो दाग़ सारे धुलें, क़ाफ़िले में चलो
ऐसा फ़ैज़ान हो, ह़िफ़्ज़ क़ुरआन हो ख़ूब ख़ुशियां मिलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

क़ब्र का भयानक तसव्वुर

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़ौर कीजिये ! सोचिये !! हो सकता है आज ही मौत आ जाए, दुन्या की सारी ने'मतें छूट जाएं, सब अरमान ख़ाक में मिल जाएं और देखते ही देखते जनाज़ा क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो जाए, आह ! आह ! आह ! तसव्वुर कीजिये उस वक़्त क्या गुज़र रही होगी जब क़ब्र में तन्हा रख कर, ऊपर से मनों मिट्टी डाल कर नाज़ उठाने वाले रुख़्सत हो रहे होंगे, हाए ! घुप अंधेरा, आह ! वह़शत का बसेरा, ऐसे में अगर **ग़ीबतों,** चुग़लियों, ऐ़ब दरियों, तोह्मतों और बद गुमानियों वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों के सबब अंधेरी क़ब्र में ख़ौफ़नाक मारपीट शुरूअ़ हो गई, भयानक आग सुलगा दी गई, त़रह़ त़रह़ के ज़हरीले सांप बिच्छू कफ़न फाड़

कर नाज़ुक बदन से लिपट गए तो क्या बनेगा ! अ़क़्ल भी सलामत होगी, बेहोशी भी त़ारी न होगी, चीख़ो पुकार भी बेकार साबित होगी, न किसी को पास बुला सकेंगे, न ख़ुद किसी के पास जा सकेंगे ! हाए मेरे **अल्लाह** !

घुप अंधेरा ही क्या वह़शत का बसेरा होगा क़ब्र में कैसे अकेला मैं रहूंगा या रब !
गर कफ़न फाड़ के सांपों ने जमाया क़ब्ज़ा हाए बरबादी ! कहां जा के छुपूंगा या रब !
डंक मच्छर का सहा जाता नहीं कैसे मैं फिर क़ब्र में बिच्छू के डंक आह सहूंगा या रब !
गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !
अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

भाभी ने जादू करवा दिया है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! घर में बीमारी, परेशानी या बे रोज़गारी हो तो आज कल अक्सर **वस्वसा** आता है कि शायद किसी ने **जादू** करवा दिया है, लिहाज़ा "बाबा जी" (ता'वीज़ धागा देने वाले) से राबित़ा किया जाता है, बिलफ़र्ज़ "बाबा जी" बता दें कि तुम्हारे क़रीबी रिश्तेदार ने **जादू** करवाया है तो उ़मूमन **बहू** या **भाभी** की शामत आ जाती है। बा'ज़ अवक़ात "बाबा जी" **जादू** करने वाले या वाली के नाम का पहला ह़र्फ़ बल्कि नाम ही बता देते हैं ! कभी कभी तो सूइयों वाला माश के आटे का पुतला और ता'वीज़ वग़ैरा भी घर से बरआमद हो जाता है। और फिर लोग ऐसे "बाबा जी" पर अन्धा भरोसा कर लेते हैं और ख़ानदान भर में **ग़ीबत** व बोहतान तराशी का बद तरीन सिल्सिला चल निकलता **नतीजतन** हरा भरा लह्लहाता ख़ानदान ताख़्तो ताराज हो कर रह जाता है। **याद रखिये !** बिला सुबूते शर्ई सिर्फ़ आ़मिलों और बाबाओं के कहने पर अगर आप ने किसी से कहा : मसलन : "**हमारी भाभी जादू करवाती है**" तो येह **बोहतान**, गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले

जाने वाला काम हुवा और अगर किसी ने छुप कर वाक़ेई **जादू** करवा भी दिया हो और आप को यक़ीनी तौ़र पर पता चल गया हो तब भी उस मख़्सूस फ़र्द का **जादू** के ह़वाले से बिला मस्लह़ते शर्ई किसी से तज़्किरा करना **ग़ीबत** है। ख़याल रहे ! आ़मिलों या बाबाओं का बताना **शर्ई सुबूत** नहीं कहलाता।

अगर घर से सूइयों वाला पुतला बरआमद हो जाए तो !

वस्वसा : "बाबा जी" ने नाम और सूइयों वाले पुतले की निशान देही कर दी फिर भी येह शर्ई सुबूत क्यूं नहीं ? क्या "बाबा जी" झूटे हैं ?

वस्वसे का इलाज : देखिये ! किसी बात को दलीले शर्ई न मानना और है और जिस की दलील न मानी गई उसे झूटा समझना और है। मसलन किसी बात में दो गवाहों की ह़ाजत हो और गवाह सिर्फ़ एक हो वोह अगर्चे कोई सालेह़, नेक बल्कि वली ही हो, क़ाज़ी उस की गवाही रद कर देता है तो इस का येह मत़लब हरगिज़ नहीं कि क़ाज़ी उस को **झूटा** समझ रहा है बल्कि शरीअ़त ने गवाही का जो निसाब मुक़र्रर किया है क़ाज़ी उस निसाब के हुक्म पर अ़मल कर रहा है। यूंही हम बाबा जी को **झूटा** नहीं कह रहे बल्कि हुक्मे शर्ई पर अ़मल करते हुए बाबा जी के बता देने को दलील बना कर किसी शख़्स पर **जादू** का इल्ज़ाम नहीं साबित कर रहे बहर ह़ाल हुक्मे शरीअ़त येही है कि किसी बाबा जी का पुतले वग़ैरा के बारे में बता देना और उस पुतले का बरआमद हो जाना इस बात की दलीले शर्ई नहीं है कि वाक़ेई फ़ुलां रिश्तेदार ही ने येह **जादू** करवाया है।

जो बाबा पैसे न मांगते हों वोह कैसे ग़लत़ हो सकते हैं ?

वस्वसा : जो बाबा जी ता'वीज़ात वग़ैरा के पैसे नहीं मांगते वोह किस त़रह़ ग़लत़ हो सकते हैं ?

वस्वसे का इलाज : अ़मलिय्यात की लाइन ऐसी है कि जो पैसे नहीं मांगता बा'ज़ अवक़ात उस की आमदनी मांगने वालों की निस्बत ज़ियादा होती है क्यूं कि बार बार पैसे मांगने वालों से लोग दूर भागते हैं। ह़ज़रते मौलाए काएनात, मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : बछड़ा जब थनों को बहुत ज़ियादा चूसने लगता है तो उस की मां उस को सींग मारती है। (مکاشفۃ القلوب، ص220) बहर ह़ाल "बाबा" अगर्चे पैसे न मांगता हो तब भी लोग चूंकि ह़क़ीक़त से ना वाक़िफ़ होते हैं इस लिये उ़मूमन ऐसों के ज़ियादा अ़क़ीदत मन्द हो जाते हैं और फिर दा'वतों और नज़रानों की तरकीब के साथ साथ शोहरत व इ़ज़्ज़त भी ह़ासिल होती है। **हुब्बे जाह** या'नी इ़ज़्ज़त व शोहरत की मह़ब्बत का मरज़ जिन को लग जाता है वोह लोग मश्हूरी के लिये करोड़ों रुपै अपने पल्ले से ख़र्च करने से भी नहीं चूकते ! आ़म इन्तिख़ाबात (Election) के मवाक़ेअ़ पर जुम्हूरी ममालिक में इस के नज़्ज़ारे आ़म होते हैं। यक़ीनन शरीअ़त के किसी भी मुआ़मले में क़त़्अ़न झोल नहीं । याद रखिये ! इस्तिख़ारात, मुवक्कलात और जिन्नात के ज़रीए़ नहीं बल्कि क़ुरआनो सुन्नत के अह़कामात के तवस्सुत़ से इस्लामी अ़दालतों के मुआ़मलात त़ै किये जाते हैं।

अगर तकिये के नीचे से ता'वीज़ निकल आए तो ?

वस्वसा : अगर भाभी या बहू की जेब या उस के तकिये के नीचे से **ता'वीज़** बरआमद हुवा हो तो क्या येह भी शर्ई सुबूत नहीं ?

वस्वसे का इलाज : येह भी शर्ई दलील नहीं। जो **ता'वीज़** बरआमद हुवा उसे "**जादू**" क़रार देने के लिये भी तो कोई मा'क़ूल दलील होनी चाहिये ! अपने इ़लाज या किसी निजी मक़्सद के लिये भी तो वोह

ता'वीज़ इस्ति'माल कर सकती हैं। बिलफ़र्ज़ वोह **जादू** ही का ता'वीज़ साबित हो जाए तब भी इस का क्या सुबूत है कि आप को नुक़्सान पहुंचाने ही के लिये वोह लाई थीं। येह शैतानी ह़रकत भी हो सकती है कि कोई शरीर जिन्न घर में फ़साद करवाने के लिये तकिये के नीचे या जेब में **ता'वीज़** डाल दे !

मुंह की बदबू के बा वुजूद शराबी न कहा जाए

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : किसी शख़्स के मुंह से शराब की बू आती हो इस बिना पर उस पर ह़द लगानी जाइज़ नहीं क्यूं कि हो सकता है उस ने शराब से कुल्ली की हो, ख़ुद न पी हो किसी ने ज़बर दस्ती पीने पर मजबूर कर दिया हो। लिहाज़ा उस मुसल्मान पर (सिर्फ़ मुंह की बदबू के सबब) **बद गुमानी** न की जाए (या'नी उस को शराबी क़रार न दिया जाए) (احیاء العلوم، 3/186)

शर्ई सुबूत किसे कहते हैं

शर्ई सुबूत की यहां सूरत येह है कि या तो जिस पर **इल्ज़ाम** है वोह ख़ुद ब होशो ह़वास इक़रार करे कि मैं ने **जादू** करवाया है, अगर वोह इन्कार करे तो दो मर्द मुसल्मान या एक मुसल्मान मर्द और दो मुसल्मान औ़रतें गवाही दें कि हम ने इस को **जादू** करते हुए अपनी आंखों से देखा है। अगर मज़्कूरा शर्ई गवाह नहीं ला सकते तो जिस पर **इल्ज़ाम** है अगर वोह **क़सम** खा ले कि मैं ने **जादू** नहीं करवाया तो उस को सच्चा मानना ज़रूरी है।

तूने चोरी की

देखिये ! शैत़ान के उक्साने पर बहू वग़ैरा पर **जादू** का इल्ज़ाम लगाने और पूछगछ के दौरान उस के इन्कार पर हरगिज़ येह बात ज़बान

पर न लाइये कि येह फंस गई तो अब इस ने इन्कार करना ही है और आदमी इ़ज़्ज़त बचाने के लिये तो झूटी क़सम भी खा लेता है इस लिये येह भी झूटी क़सम खा रही है। ख़ुदारा एक मुसल्मान की इ़ज़्ज़त की अहम्मिय्यत को समझने की कोशिश कीजिये। आप की इ़ब्रत के लिये एक ईमान अफ़रोज़ ह़दीस शरीफ़ अ़र्ज़ करता हूं : चुनान्चे **ह़ज़रते** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ह़ज़रते **ईसा** इब्ने मरयम ने एक शख़्स को चोरी करते देखा तो उस से फ़रमाया : "तूने चोरी की।" वोह बोला : "हरगिज़ नहीं उस की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं।" तो ह़ज़रते ईसा ने फ़रमाया : मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया और मैं ने अपने आप को झुटलाया। (مسلم، ص1288، حدیث:2368)

..... कि मेरी आंखों ने देखने में ग़लत़ी की

अल्लाहु अक्बर ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلَیْہِ السَّلَام ने क़सम खा लेने वाले के साथ कितना अ़ज़ीम बरताव किया। ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ उस क़सम खाने वाले को छोड़ देने के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते **ईसा रूहुल्लाह** عَلَیْہِ السَّلَام के जज़्बात की अ़क्कासी करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं : या'नी इस क़सम की वज्ह से तुझे सच्चा समझता हूं कि मोमिन बन्दा **अल्लाह** (पाक) की झूटी क़सम नहीं खा सकता, (क्यूं कि) उस के दिल में **अल्लाह** के नाम की ता'ज़ीम होती है, अपने मुतअ़ल्लिक़ ग़लत़ फ़हमी का ख़याल कर लेता हूं कि मेरी आंखों ने देखने में ग़लत़ी की। (मिरआत, जि. 6/ 233)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तौबा और मुआ़फ़ी का त़रीक़ा

उम्मीद है मस्अला समझ में आ गया होगा, ऐसे मवाक़ेअ़ पर सब्र करना चाहिये वरना बद गुमानियों, ग़ीबतों और तोह्मतों वग़ैरा गुनाहों से बचना दुश्वार हो जाता है। अब अगर किसी ने इस त़रह़ की ख़त़ा की है कि बिग़ैर सुबूते शर्ई जादू का इल्ज़ाम लगा बैठा है तो वोह **अल्लाह** पाक की बारगाहे बेकस पनाह में गिड़गिड़ा कर तौबा करे और तौबा के तक़ाज़े भी पूरे करे नीज़ जिस पर इल्ज़ाम लगाया मसलन भाभी या बहू वग़ैरा तो उन से मुआ़फ़ भी करवाए। रस्मी त़ौर पर सिर्फ़ SORRY कह देना काफ़ी नहीं बल्कि जिस धड़ल्ले (या'नी बेबाकी और धूम धड़क्के) से उस की बदनामी और दिल आज़ारी की है उसी की मुनासबत से ख़ूब आ़जिज़ी कर के, गिड़गिड़ा कर और हाथ जोड़ कर उस से इस क़दर मुआ़फ़ी मांगे कि उस का दिल मुत्मइन हो जाए और वोह मुआ़फ़ कर दे नीज़ जिन जिन को येह बात बताई हो उन के सामने भी कहना पड़ेगा कि मैं ने झूटा **इल्ज़ाम** लगाया था। वाक़ेई यहां नफ़्स मुआ़फ़ी मांगने से इन्कार ही करेगा। अब बन्दे पर है कि मुआ़फ़ी मांग कर दुन्यवी त़ौर पर अपने नफ़्स की मा'मूली सी ज़िल्लत इख़्तियार करे या आख़िरत की दर्दनाक रुस्वाई और होलनाक सज़ा। देखिये! शैत़ान त़रह़ त़रह़ के ह़ीले बहाने सुझाएगा, वस्वसे दिलाएगा कि मसलन यूं तो येह सर चढ़ जाएगी, इस का दिल खुल जाएगा, हम पर क़ब्ज़ा जमा लेगी, हमारी बदनामी हो जाएगी वग़ैरा। आप इन शैत़ानी ख़यालों की त़रफ़ न जाइये, **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये हुक्मे शरीअ़त पर अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم

इस की बरकत ख़ुद ही देख लेंगे। यहां तक कि ख़ुदा न ख़्वास्ता वोह वाक़ेई मुजरिमा हुई तब भी आप की ख़ुश अख़्लाक़ी और आ़जिज़ी की बरकत से اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم आप की ख़ैर ख़्वाह बन जाएगी।

ड्राइवर की जान बच गई

एक इस्लामी बहन के ह़ल्फ़िय्या बयान का ख़ुलासा है कि मेरे एक भाई जो कि अ़रब शरीफ़ के शह्र "रियाज़" में ब हैसिय्यते ड्राइवर मुलाज़मत कर रहे हैं। एक दिन ड्राइविंग के दौरान ख़त़रनाक ह़ादिसा हुवा और वोह बेहोश हो गए। **दिमाग़ी चोटें** इतनी ज़ियादा थीं कि बचने की उम्मीद न रही। हम लोग मजबूर थे उन को देखने भी न जा सकते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मैं आ़शिकाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत किया करती थी। मैं ने भाईजान वाली परेशानी अपने अ़लाक़े की एक इस्लामी बहन को बताई। उन्हों ने मुझे दिलासा दिया और मश्वरा दिया कि इसी त़रह़ पाबन्दी से इज्तिमाअ़ में शिर्कत कर के ख़ूब दुआ़ किया करो। चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इज्तिमाअ़ में की जाने वाली **दुआ़ओं** की बरकत से तीन माह के अन्दर अन्दर भाईजान ने बातचीत शुरूअ़ कर दी। डॉक्टर भी ह़ैरान रह गए क्यूं कि **दिमाग़ी चोटें** बहुत ज़ियादा थीं और ब ज़ाहिर बचने की उम्मीद बहुत कम थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इज्तिमाआ़त की बरकात पर मेरी अ़क़ीदत और ज़ियादा मज़बूत़ हुई।

ऐ इस्लामी बहनो कभी छोड़ना मत मसाइब को देगा भगा मदनी माह़ोल
तू पर्दे के साथ इज्तिमाआ़त में आ तेरी देगा बिगड़ी बना मदनी माह़ोल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत

तस्ख़ीरे क़ुलूब (या'नी दिलों को क़ाबू करने) का बड़ा वज़ीफ़ा चेहरे पर मुस्कुराहट रखना है मगर सुन्नत की निय्यत से मुस्कुराइये और नेकी की दा'वत की ख़ातिर लोगों को क़रीब कीजिये।

(25 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

978-969-722-223-0
01082220

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net